जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अहिंसा तो अमृत है; जो इस अमृत के प्याले को पियेगा, वह अमर होगा, सुखी होगा, शान्त होगा।
ह्न गागर में सागर, पृष्ठ : ९६

वर्ष : 28, अंक : 9 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (प्रथम)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

पूरे देश में अष्टाह्निका महापर्व हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया

1. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आषाढ़ मास की अष्टाह्निका महापर्व के शुभ अवसर पर श्री चांदमलजी जैन परिवार, कोटा वालों की ओर से दिनांक 14 से 21 जुलाई, 2005 तक श्री सिद्धचक्र महा मण्डल विधान का आयोजन अत्यन्त धूम-धाम से किया गया।

इस अवसर पर प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के विधान की जयमाला पर तथा रात्रि में ब्र. यशपालजी जैन के विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। सायंकाल त्रिमूर्ति जिनमंदिर पर जिनेन्द्र भक्ति होती थी।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित चिन्मयजी पिड़ावा, पण्डित जितेन्द्रजी राठी एवं श्री टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सम्पन्न कराये गये।

2. **कोटा (राज.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में पर्व के अवसर पर आदरणीय बाबू जुगलकिशोरजी युगल के नियमसार कलश-73 पर सारगर्भित प्रवचन हुये तथा पण्डित सुदीपजी जैन बीना के भी प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। **ह्न माणकचन्द कासलीवाल**

3. **मुम्बई (महा.) :** श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज बृहन्मुम्बई के संयोजकत्व में मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में निम्नानुसार धर्म प्रभावना हुई ह्न

श्री सीमन्धर जिनालय जवेरी बाजार में पण्डित सुबोधजी जैन सिवनी, **बोरीवली** में पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, **दहीसर** में पण्डित कस्तूरचन्दजी जैन विदिशा, **मलाड (वेस्ट)** में पण्डित विपीनजी जैन आगरा, **भायन्दर** में पण्डित हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, **मलाड (ईस्ट)** में पण्डित श्रेयांसजी जैन जबलपुर, **दादर** में पण्डित ज्ञायकजी जैन राजकोट के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ समाज को प्राप्त हुआ।

4. **अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री सीमंधर जिनालय में श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में पंचमेरु नन्दीश्वर विधान का आयोजन किया गया।

पर्व के अवसर पर प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया के मुनि का स्वरूप विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

दोपहर में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन का लाभ भी समाज को मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा सम्पन्न कराये गये; जिसमें श्री हीराचन्दजी बोहरा का सहयोग प्राप्त हुआ।

5. **सोलापुर (महा.) :** यहाँ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन कासार मंदिर में पर्व के मध्य दिनांक 16 से 19 जुलाई तक श्री 24 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया। प्रतिदिन श्री सुरेशजी कोठडिया एवं पण्डित विजयजी कालेगोरे के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रशांतजी मोहरे ने सम्पन्न कराये। इसी अवसर पर वीतराग-विज्ञान पाठशाला के छात्रों को प्रमाण-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत भी किया गया।

6. **उज्जैन (म.प्र.) :** यहाँ श्री सीमन्धर दिग. जैन मंदिर, क्षीरसागर कॉलोनी में पर्व के अवसर पर फतेपुर से पधारे पण्डित चन्दुभाई मेहता के दोनों समय समयसार की-31 वीं गाथा पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही दोनों समय पण्डित विमलदादा झांझरी के प्रवचनों का भी लाभ मिला। बालकक्षा पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन द्वारा ली गई। **(शेष पृष्ठ 4 पर ...)**

कल्पद्रुम महामण्डल विधान सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन लश्करी मंदिर में दिनांक 13 जून से 19 जून, 2005 तक श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान का आयोजन श्रीमती चन्दाबाई ध.प. श्री धर्मचन्दजी के सुपुत्र श्री इन्द्रजीतजी गंगवाल परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन के मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित सुशीलजी, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल एवं पण्डित कांतिकुमारजी पाटनी का भी सहयोग मिला।

दोपहर में पण्डित मनीषकुमारजी पिड़ावा द्वारा छहढाला की कक्षा एवं सायंकाल पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री द्वारा छहढाला पर ही प्रवचन किये गये। बालकों की कक्षा पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर द्वारा ली गई।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित मनीषजी पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ़ एवं पण्डित सुनीलजी भोपाल द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इसी अवसर पर छिन्दवाड़ा के कार्यकर्त्ताओं द्वारा भव्य समवशरण की रचना बनाई गयी थी, जो 10 दिनों तक विशेष आकर्षण का केन्द्र रही।

अन्तिम दिन विशाल जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को शास्त्रों की कीमत कम करने हेतु 50 हजार रुपये प्राप्त हुये। अन्य अनेक संस्थाओं को भी दान दिया गया। ●

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

7

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

वस्तु स्वातंत्र्य और अहिंसा

दो हजार वर्ष पूर्व लिखे आचार्य उमास्वामी ने तत्वार्थ सूत्र में कहा है कि ह्न **'प्रमत्तयोगातप्राणव्ययरोपणं हिंसा'** अर्थात् प्रमाद के योग से हुआ जीवघात ही हिंसा है। वह प्रमाद १५ प्रकार का है ह्न ४ कषायें, ४ विकथायें, ५ इन्द्रियों के विषय और निद्रा व प्रणय इनको आत्मा में होना भाव हिंसा एवं प्राणों का व्यपरोपण द्रव्य हिंसा है और इनका आत्मा में उत्पन्न न होना ही अहिंसा है। इस सूत्र में प्रमत्तयोग वाक्य का अर्थ भावहिंसा और 'प्राण व्यपरोपण' वाक्य का अर्थ द्रव्य-हिंसा है।

विराग बोला ह्न ''वस्तु स्वातंत्र्य का अर्थ तो मैं समझ गया हूँ कि ह्न लोक में सभी द्रव्य अपने आप में परिपूर्ण, स्वाधीन, स्वावलम्बी और परनिरपेक्ष हैं। उनके अस्तित्व और परिणमन के लिए किसी अन्य द्रव्य की कतई आवश्यकता नहीं है। उनका अपना स्व-द्रव्य, स्व-क्षेत्र, स्व-काल एवं स्व-भावरूप स्व-चतुष्टय है। जिनके कारण उनका स्वतंत्र अस्तित्व है और उनके अपने स्वतंत्र पाँच समवाय हैं, पाँच कारण हैं; जिनसे उनका पर्यायरूप परिणमन होता है। उन समवायों के नाम हैं ह्न १. स्वभाव, २. पुरुषार्थ, ३. होनहार ४. काललब्धि और ५. निमित्त; परन्तु इस संदर्भ में विचारणीय प्रश्न यह है कि द्रव्य/अहिंसा के साथ इस वस्तु स्वातंत्र्य का समायोजन कैसे हो यह स्पष्ट करें।''

इस प्रश्न के उत्तर में, समताश्री ने कहा ह्न प्राणघातरूप द्रव्य हिंसा तो व्यवहार नय का कथन है, क्योंकि वह निमित्त सापेक्ष है। वास्तव में तो अन्य जीवों के जीवन, मरण, सुख-दुख से भी हिंसा-अहिंसा का दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। उनके जीवन-मरण एवं सुख-दुःख में भी अंतरंग निमित्त कारण तो उनके ही आयुकर्म तथा साता-असाता वेदनीयकर्म हैं और उपादानकारण वे स्वयं हैं।

दो हजार वर्ष पूर्व आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने प्राकृत भाषा में लिखा हैं, जिसका हिन्दी पद्यानुवाद इस प्रकार है ह्न

मैं मारता हूँ अन्य को या मुझे मारें अन्यजन।
यह मान्यता अज्ञान है जिनवर कहें हे भव्यजन !।।
निज आयु क्षय से मरण हो यह बात जिनवर ने कही।
तुम मार कैसे सकोगे जब आयु हर सकते नहीं?
मैं हूँ बचाता अन्य को मुझको बचावे अन्यजन।
यह मान्यता अज्ञान है जिनवर कहें हे भव्यजन ! ।।
सब आयु से जीवित रहें ह्न यह बात जिनवर ने कही।
जीवित रखोगे किसतरह जब आयु दे सकते नहीं?।।
मैं सुखी करता दुःखी करता हूँ जगत में अन्य को।
यह मान्यता अज्ञान है क्यों ज्ञानियों को मान्य हो?।।
हैं सुखी होते दुखी होते कर्म से सब जीव जब।
तू कर्म दे सकता न जब सुख-दुःख दे किस भाँति तब।।
जो मरे या जो दुःखी हों वे सब करम के उदय से।
'मैं दुःखी करता-मरता' ह्न यह बात क्यों मिथ्या न हो?।।
मैं सुखी करता दुःखी करता हूँ जगत में अन्य को।
यह मान्यता ही मूढ़मति शुभ-अशुभ का बंधन करे।।

अतः जो यह मानता है कि मैं पर जीवों को मारता हूँ, और पर जीव मुझे मारते हैं, मैं जीवों की रक्षा करता हूँ, उन्हें सुखी-दुःखी करता हूँ या वे मुझे बचाते हैं, सुखी-दुःखी करते हैं। वह मूढ़ (मोही) है, अज्ञानी है, इसके विपरीत मानने वाला ज्ञानी है।

आचार्य अमृतचंद्र ने वस्तु स्वातंत्र्य के संदर्भ में जीवों में हिंसकपना एवं अहिंसकपना सिद्ध करते हुए कलश में कहते हैं कि ह्न

जीवन-मरण अर दुक्ख-सुख सब प्राणियों के सदा ही।
अपने कर्म के उदय के अनुसार ही हों नियम से।।
करे कोई किसी के जीवन-मरण अर दुक्ख-सुख।
विविध भूलों से भरी यह मान्यता अज्ञान है।।

इस जगत में जीवों के जीवन-मरण, सुख-दुःख ह्न यह सब सदैव नियम से अपने द्वारा उपार्जित कर्मोदय से होते हैं। दूसरा पुरुष दूसरे के जीवन मरण, सुख-दुःख का कर्त्ता हैं ह्न यह मानना तो अज्ञान है।

जो पुरुष पर के जीवन-मरण, सुख-दुःख का कर्ता दूसरों को मानते हैं, वे अहंकार रस से भरे हैं कर्मेन्द्रिय को करने के इच्छुक होने से नियम से मिथ्यादृष्टि हैं और अपने आत्मा का घात करने वाले होने से हिंसक है।''

आगम में जो स्व और अन्य प्राणियों की अहिंसा की बात कही गई है, वह केवल आत्मरक्षा के लिए है, पर के लिए नहीं।

आज से एक हजार वर्ष पूर्व आचार्य अमृतचन्द्र ने हिंसा-अहिंसा के स्वरूप का जिस सूक्ष्मता से कथन किया वैसा अन्यत्र कहीं देखने में नहीं आया। वस्तु स्वातंत्र्य के संदर्भ में उनके कतिपय अत्यन्त उपयोगी तथ्य प्रस्तुत हैं। हिंसा-अहिंसा के स्वरूप का उद्घाटन करते हुए वे कहते हैं कि ह्न ''वस्तुतः तो हिंसा-अहिंसा का सम्बन्ध अपने आत्मा से ही है, परजीवों की हिंसा तो कोई कर ही नहीं सकता। मूल कथन इसप्रकार है ह्न

अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्य हिंसेति।
तेषामेवोत्पत्ति हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः।।

आत्मा में रागादि भावों की उत्पत्ति ही हिंसा है और रागादि भावों की उत्पत्ति न होना ही अहिंसा है।''

पण्डित टोडरमलजी ने भी लिखा है कि हिंसा में प्रमाद परिणति मूल है और विषय सेवन में अभिलाषा मूल है। इसे ही यदि द्रव्य हिंसा व भाव हिंसा के रूप में कहें तो इस प्रकार कह सकते हैं ह्न रागादि भावों के होने पर आत्मा के उपयोग की शुद्धता का घात होना भावहिंसा है और अपने रागादिभाव निमित्त है जिसमें ह्न ऐसे अपने पराये द्रव्य प्राणों का घात होना द्रव्य हिंसा है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि पराये प्राणों के घात में द्रव्यहिंसा

का पापबंध किसको हुआ। हमारे राग-द्वेष से स्वयं की भावहिंसा तो होती ही है, पर जीवों के घातों में भी हमारे राग-द्वेष ही निमित्त बनते हैं, अतः व्यवहार में निमित्त पर आरोप होने से द्रव्य हिंसा भी हमारी ही हुई। क्योंकि उस द्रव्य हिंसा के फल का भागीदार भी हमारा राग-द्वेष ही है। अन्य जीव का मरण तो उसके आयुकर्म के अनुसार होना ही था सो हुआ। फिर भी निश्चय से हमारे रागादि भावहिंसा एवं उपचार से उस मृत्यु को द्रव्य हिंसा कहने का व्यवहार है। परन्तु पर के जीवन-मरण से किसी को कोई पुण्य-पाप नहीं होता। पुण्य-पाप तो हमारे प्रमाद के कारण ही होता है। वस्तुतः दोनों प्रकार की हिंसा एक व्यक्ति में ही हुई, क्योंकि अन्य के प्राणों के व्यपरोपण से वही निमित्त बना है न ! कहा भी है ह्न

''सूक्ष्मापि न खलु हिंसा, परवस्तु निबन्ध ना भवति पुंसः
हिंसायतन निवृत्ति परिणाम विशुद्धये तदपि कार्याः।।

यद्यपि परवस्तु के कारण सूक्ष्म हिंसा भी नहीं होती, तथापि अपने परिणामों की विशुद्धि के लिए हिंसा के आयतनों से तो बचना ही चाहिए।''

इसप्रकार यद्यपि वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त की स्वीकृति में भूमिकानुसार अहिंसा के उपदेश में कोई बाधा नहीं आती; किन्तु ध्यान रहे, मारने के भाव की भाँति बचाने के भाव भी शुभभाव होने से हिंसा का ही दूसरा प्रकार है। अतः यह भी बंध का ही कारण है। और मैं पर जीव की रक्षा कर सकता हूँ या मार सकता हूँ ह्न यह मान्यता तो मिथ्यात्व है, इस बात को अवश्य ध्यान में रखना योग्य है।

विराग ने कहा ह्न ''वस्तु स्वातंत्र्य के संदर्भ में अहिंसा'' विषय तो स्पष्ट हो गया; परन्तु अभी जो निमित्त की बात आई है, उस परद्रव्य रूप निमित्त का वस्तु स्वातंत्र्य में क्या स्थान है?

समता श्री ने आश्वस्त किया ह्न 'आज का समय पूरा हुआ, कल वस्तुस्वातंत्र्य को निमित्त-उपादान के आलोक में समझायेंगे।' ●

राष्ट्रीय स्वतंत्रता और वस्तुस्वातंत्र्य

समता श्री प्रवचनार्थ आसन पर बैठीं ही थीं कि उनकी नजर सामने बैठे समधी स्वतंत्रकुमार और जवाँई गणतंत्रकुमार पर जा पड़ी। महिला कक्ष में ज्योत्स्ना भी बैठी थी। उन्हें प्रवचन में आया देखकर ह्न समताश्री ने मन ही मन प्रसन्न होते हुए उनका परिचय कराने हेतु हँसते हुए कहा ह्न ''स्वतंत्रता प्रेमियों को १५ अगस्त और २६ जनवरी के आजादी के दिन इतने महत्वपूर्ण हो गये हैं कि उन दिनों में जन्में सहस्त्रों शिशुओं के नाम भी स्वतंत्रकुमार और गणतंत्रकुमार रखे गए। जिसके प्रमाण के रूप में हमारे सामने स्वतंत्रकुमार और गणतंत्रकुमार दोनों बैठे हैं। ऐसे स्वतंत्रता प्रेमी परिवार के महानुभाव श्री स्वतंत्रकुमारजी और चि. गणतंत्रकुमार आज धर्मसभा में पधारे हैं, हम उनका स्वागत करते हैं और प्रतिदिन पधारने के लिए आमंत्रित करते हैं।

संयोग से बेटी ज्योत्स्ना के श्वसुर और पति का जन्मदिन भी १५ अगस्त और २६ जनवरी है, इसीकारण उसके स्वसुर का नाम श्री स्वतंत्रकुमार और पति का नाम चि. गणतंत्रकुमार रखा गया होगा।''

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए समताश्री ने कहा ह्न यद्यपि प्रजातंत्रीय प्रणाली के संदर्भ में 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' ह्न यह नारा अति उत्तम है। इस नारे ने ही सैकड़ों वर्षों से परदेशियों की पराधीनता में जकड़ी जनता के कानों में जागरण का मंत्र फूँककर उसे पराधीनता से मुक्त कराया है। एतदर्थ इसमें हुई कुर्बानी की जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। देश को परदेशियों की गुलामी से सदा मुक्त रहना ही चाहिए; परंतु हम यहाँ जिस वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त की बात कर रहे हैं, वह धर्म और दर्शन में प्रतिपादित वस्तु स्वातंत्र्य का सिद्धान्त इस राष्ट्रीय स्वतंत्रता से बिल्कुल भिन्न है। दोनों में दीपक और सूरज जैसा महान अन्तर है। यदि राष्ट्रीय स्वतंत्रता दीपक है तो वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त सूरज है।

वस्तुतः राष्ट्रीय स्वतंत्रता का उस आध्यात्मिक वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त से कोई सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि यह राष्ट्रीय स्वतंत्रता तो केवल मानव समाज तक ही सीमित है। वह भी मात्र विदेशी शासन-प्रशासन एवं भारतीय राजतंत्रीय और जागीरदारी, जमीदारी प्रथा से आजाद कराने तक ही सीमित है। साथ ही स्वदेशी प्रजातंत्रीय प्रणाली में और शासकीय-प्रशासकीय नियमों का निर्वाह करने, कानूनों की पालना करने की पराधीनता तो इसमें भी कम नहीं है। इतना ही नहीं पारिवारिक भरण-पोषण के लिए नौकरी चाकरी करने की परतंत्रता भी है ही। अतः इस लौकिक स्वतंत्रता से वह आध्यात्मिक वस्तुस्वातंत्र्य की बात बिल्कुल निराली है। दोनों बिल्कुल भिन्न-भिन्न हैं।

लौकिक आजादी के सम्बन्ध में एक व्यंगकार ने तो व्यंग में यहाँ तक कह डाला कि ह्न यह कैसी आजादी? जिसमें मनमाने ढंग से सड़क पर चलने की भी आजादी नहीं। जगह-जगह नोटिस बोर्ड लगे 'चलो सड़क की बाँयी पटरी' खाने-पीने की आजादी नहीं, यदि भाँग खाकर या शराब पीकर रोड़ पर निकले तो पुलिस पकड़ कर कोतवाली में बिठा देती है, जहाँ देखो वहाँ 'नो एन्ट्री' के नोटिस बोर्ड लगे हैं। पालतू पशुओं जैसे बन्धन हैं; फिर भी कहते हो कि हम आजाद हैं। खैर !

व्यंगकार ने तो कुछ अधिक ही कह दिया; फिर भी पराधीनता तो कदम-कदम पर है ही। इसलिए हम दृढता से कह सकते हैं कि वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त से इस लौकिक स्वतंत्रता और परतंत्रता का दूर का भी सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि ये मात्र मानव के व्यवहारिक जीवन की बातें हैं और वे आध्यात्मिक सिद्धान्त है, जिसे समझने और श्रद्धा करने से हम निश्चिंत और निर्भार होकर ध्यान, चिन्तन-मनन कर अर्न्तमुख हो सकते हैं। **(क्रमशः)**

धार्मिक बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

1. भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री दिग. जैन महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट द्वारा दिनांक 21 से 30 जून, 2005 तक लगभग 21 विभिन्न स्थानों पर एक साथ बाल संस्कार शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में लगभग 700 शिविरार्थियों ने लाभ लिया तथा अन्तिम दिन परीक्षा लेकर पुरस्कार वितरित किये गये।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, शाखा महावीर चौक भिण्ड के सहयोग से शिविर में 5000/- रुपये का सत्साहित्य वितरित किया गया।

शिविर पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री भिण्ड के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

2. टीकमगढ़ (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल, महिला मण्डल, बाल मण्डल एवं कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण समिति उज्जैन के सहयोग से शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में स्थानिय विद्वान पण्डित निलयजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित निपुणजी शास्त्री एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री छिन्दवाड़ा द्वारा धर्म प्रभावना हुई। **ह्न सुमित जैन**

धर्म के दशलक्षण

(कविवर मंगतराजजी कृत)

तर्ज : श्री सिद्धचक्र का पाठ करो गुण ....।

अब छोड़ अनादि भूल, विषय सुख तूल, जगत दुख मूल।
कर्म भ्रम भारी, दशलक्षण धर्म विचार जीव संसारी ।। टेक।।

उत्तम क्षमा

तन क्रोध घटा घनघोर, उठी चहुँ ओर शक्ति का मोर,
जो शोर मचावे, तब हिंसा अंकुर भावभूमि जम जावे।
नहिं गिने सबल बलहीन, अनाथ अरु दीन, करे नित क्षीण,
रात अरु दिन में, सब भूल जाये उपकार हाय इक छिन में।।
द्वीपायन क्रोध उपाया, द्वारावती नगर जलाया।
मन समता भाव न आया, हो मुनि नरक पद पाया।।
तप ऋद्धि सिद्ध भरपूर, क्रोध कर दूर, भाव मुनि सूर,
वे शुद्ध उपयोगी, सब मारन ताडन सह जैन के योगी।
मुनि उत्तम क्षमा विचार, सहे दुख भार, क्रोध को मार,
दया आचारी, दसलक्षण धर्म विचार जीव संसारी।।

उत्तम मार्दव

यह जाति लाभ कुल रूप ज्ञान तप भूप जो शक्ति अनूप,
आठ मद मानों, कुछ पर आश्रित कुछ क्षिणकरूप पहिचानों।
है पर्वत सम मद मान, चढे अनजान, लहु जिय जान,
जीव को हेरे, वह इनको देखे क्षुद्र तभी मुह फेरे।।
इक इन्द्री सुर हो जावे, उत्तम नीचा कुल पावे।
राजा हो रंक कहाये, क्यों मद में चित भरमाये।।
तज शयन सेज गज-बाज, जगत का राज, करे निज काज,
भूमि पर सोते, मुनि पाव पयादा चले मानमद खोते।
सो उत्तम मार्दव जान, विनय सम्मान, तजो अभिमान,
धर्म परिहारी, दशलक्षण धर्म विचार जीव संसारी।।

उत्तम आर्जव

है कपट निपट दुख भार, बडे संसार कुगति का दाता,
विचारो मन में, नहिं चढे काठ की हांडि फेर अग्नि में।
नहिं मिले कपट धन-मान, यह नट-खट चाल, खुले भ्रम जाल,
अनेक जतन की, जो रूप धरो सो लखे रीत दर्पण की।।
नहिं छुपे अंत खुल जावे जो कपटी बात बनावे।
फिर कोई नहीं बतियावे, क्यों माया मन भरमावे।।
मन वचन काय त्रिक योग, शुद्ध उपयोग, धार तज भोग,
मुनी बड़भागी, सो उत्तम आर्जव धर्म धरे वैरागी।
जो मन में करो, विचार वही उपचार, यही व्यवहार,
करो परचारी, दशलक्षण धर्म विचार जीव संसारी।।(क्रमशः)

(अष्टाह्निका पर्व ... पृष्ठ 1 का शेष ...)

7. **रतलाम (म.प्र.) :** यहाँ तोपखाना स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में चौंसठ ऋद्धि विधान का आयोजन किया गया; जिसमें पण्डित श्री पदमकुमारजी अजमेरा के प्रात: एवं रात्रि में प्रवचन हुये। विधि-विधान के कार्य भी पण्डितजी ने ही सम्पन्न कराये। **– जम्बूकुमार पाटोदी**

8. **ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ श्री दिग. जैन महावीर परमागम मंदिर मुरार में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन श्री पोथीराम मुकेशकुमार जैन परिवार, बड़ागाँव की ओर से किया गया। इस अवसर पर पण्डित मेहुलकुमारजी मेहता कोलकाता के दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। विधि-विधान के कार्य पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा एवं अनुभवप्रकाशजी मौ द्वारा सम्पन्न कराये गये।

9. **लूणदा (राज.) :** यहाँ श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, बरां के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र के आधार से कर्म का स्वरूप एवं रात्रि में सुख यहाँ विषय पर प्रवचन हुए। दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक के द्वितीय अध्याय पर कक्षा ली गई। इस अवसर पर नन्दीश्वर विधान का भी आयोजन किया गया। **ह्न ललित जैन**

10. **पुणे (महा.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल में पण्डित विक्रान्तजी पाटनी, झालरापाटन के प्रात: सिद्धचक्र विधान की जयमाला पर, दापेहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में पाहुडदोहा पर प्रवचन हुए।

ज्ञातव्य है कि दहिगाँव एवं वालचन्दनगर में भी आपके एक-एक प्रवचन का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। **ह्न प्रशान्त दोशी**

11. **रायपुर (छ.ग.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीमती कंचनबाई खैरागढ़ के मोक्षशास्त्र पर प्रवचन हुए। **ह्न अशोक जैन**

तृतीय सत्र का उद्घाटन

द्रोणगिरि (छतरपुर-म.प्र.) : श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट द्रोणगिरि द्वारा संचालित आचार्य समन्तभद्र शिक्षण संस्थान के तृतीय सत्र का उद्घाटन दिनांक 16 जुलाई, 2005 को श्रीमंत सेठ सुरेशचन्द जैन सागर एवं प्रो. केवलचन्दजी जैन सागर के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण श्री मगनलालजी गोयल टीकमगढ़ ने किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री ने की। विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्री कपूरचन्दजी करेली, ब्र. विमला बेन, श्री विनोदजी निरखे मलकापुर, इन्जि. सुनीलजी बड़कुल आदि मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्राचार्य पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा एवं आभार प्रदर्शन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। इस अवसर पर क्षेत्र के मंत्री श्री श्रेणिकजी मलैया सागर विशेष रूपसे उपस्थित थे। **ह्न प्रेमचन्द जैन**

नवीन सत्र के विद्यार्थियों हेतु परिचय सम्मेलन सम्पन्न

जयपुर : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में अध्ययनरत शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा आगन्तुक नवीन छात्रों का परिचय सम्मेलन श्री शांतिनाथजी की खोह में दिनांक 24 जुलाई, 05 को सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में ब्र. यशपालजी जैन एवं श्रीमती कमलाजी भारिल्ल उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित संजीवजी गोधा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री एवं श्री प्रकाशजी छाबड़ा (यू.एस.ए.) भी मंचासीन थे।

सम्मेलन में उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ एवं शास्त्री कक्षाओं के विद्यार्थियों का परिचय कराया गया। मंदिरजी का भी परिचय दिया गया। **ह्न स्वतंत्र जैन**

वीर शासन जयन्ती महोत्सव मनाया

1. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 22 जुलाई को वीरशासन जयन्ती पर्व के अवसर पर प्रात: प्रासंगिक पूजन के पश्चात् पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का प्रवचन हुआ।

प्रवचनोपरान्त पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में श्री सीमंधर जिनालय पर श्री अजितकुमारजी तोतूका परिवार द्वारा विशेष स्वर्णध्वजा स्थापित की गई। साथ ही त्रिमूर्ति जिनमंदिर पर भी अन्य महानुभवों द्वारा 24 स्वर्ण ध्वजाएँ स्थापित की गई।

ज्ञातव्य है कि इसी उपलक्ष में दिनांक 17 जुलाई को श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रों द्वारा **भगवान महावीर और उनका सर्वोदय शासन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्री ताराचन्दजी सोगाणी ने की। गोष्ठी में श्रेष्ठ वक्ता के रूप में तपीश जैन एवं दीपक अथणे को चुना गया। संचालन विकास जैन एवं मंगलाचरण कपिल जैन ने किया।

2. **कोटा (राज.) :** यहाँ वीरशासन जयन्ती महापर्व के अवसर पर आदरणीय युगलजी के प्रासंगिक प्रवचन के अतिरिक्त मुमुक्षु महिला मण्डल वीर वनिता संघ की ओर से महिला सभा का आयोजन किया गया; जिसमें विदुषी महिलाओं के सारगर्भित भाषण हुए। कार्यक्रम की अध्यक्ष श्रीमती विमला जैन एवं मुख्य अतिथि श्रीमती शान्ती पोरवाल थी। कार्यक्रम का संचालन ब्र. नीलिमा जैन ने किया। **– राजमती बज**

गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

1. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का नवीन सत्र एवं विद्यालयीन समस्त गतिविधियाँ प्रारंभ हो चुकी है; जिसमें साप्ताहिक गोष्ठी की प्रमुख गतिविधी में प्रथम गोष्ठी दिनांक 3 जुलाई, 2005 को **सात तत्त्व : एक अनुशीलन** विषय पर आयोजित की गई।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने की। संचालन आदित्य जैन एवं मंगलाचरण अक्षय जैन ने किया। गोष्ठी में शास्त्री वर्ग से प्रथम स्थान विनय जैन बून्दी एवं द्वितीय स्थान अनुराज जैन फिरोजाबाद ने प्राप्त किया।

2. इसी शृंखला में दिनांक 10 जुलाई को **सामान्य श्रावकाचार** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता श्री विनयजी पापड़ीवाल ने की। गोष्ठी में प्रथम स्थान उपाध्याय वर्ग से अनुराग जैन भगवा एवं शास्त्री वर्ग से आदित्य जैन खुरई ने प्राप्त किया। संचालन अनिल आलमान एवं मंगलाचरण जयदीप सेठ ने किया। **ह्न संयोजक, कमलेश एवं शाकुल जैन**

छपकर तैयार

डॉ. श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई द्वारा लिखित के.जी. भाग-1 का अंग्रेजी संस्करण छपकर तैयार है; इच्छुक महानुभाव निम्न स्थानों से प्राप्त कर सकते हैं ह्न

1. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4 बापूनगर जयपुर-15 (राज.)
2. सीमन्धर जिनालय, 173/175, मुम्बादेवी रोड, मुम्बई।
3. श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, लाम रोड, देवलाली-नासिक (महा.)

छात्र-वृत्तियाँ

भारत में मान्यता प्राप्त स्कूलों, कॉलेजों, प्रशिक्षण-संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों के लिये योग्यता तथा कमजोर आर्थिक स्थिति के आधार पर चुने हुये छात्रों को दो श्रेणियों में छात्र-वृत्तियाँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

नॉन रिफण्डेबल (वापिस न होनेवाली) छात्र वृत्ति : नॉन तकनीकी माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, स्नातक व स्नातकोत्तर आदि शिक्षा के लिये 50 रुपये से 250 रुपये तक मासिक छात्र-वृत्ति दी जाती है।

रिफण्डेबल (वापिस चुकायी जानेवाली) ब्याज मुक्त ऋण के रूप में छात्र वृत्ति : तकनीकी, इंजिनियरिंग, कम्प्यूटर, मेडिकल, बिजनस मैनेजमेंट व जैनदर्शन में अनुसंधान आदि पाठ्यक्रमों में उच्च शिक्षा के लिये प्रतिभाशाली छात्रों को 500 रुपये से 1000 रुपये मासिक तक छात्र-वृत्ति दी जायेगी।

निर्धारित आवेदन-पत्र स्वयं का पता लिखा एवं 5 रुपये का डाक टिकिट लगा लिफाफा भेजकर मंगा सकते हैं। सम्पूर्ण विवरण सहित आवेदन-पत्र कार्यालय में पहुँचने की अंतिम तिथि 31 अगस्त, 05 है। जिन छात्रों को गत वर्ष छात्र-वृत्ति दी गई थी, यदि वे इस वर्ष भी छात्र वृत्ति चाहते हैं तो पुन: आवेदन कर सकते हैं। **ह्न मंत्री,** जैन सोशल वेलफेयर एसोसिएशन, ई-9, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016

पाठशाला निरीक्षण

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर सुलतानपुर द्वारा 7 से 14 जुलाई, 2005 तक देश की राजधानी दिल्ली में संचालित वीतराग-विज्ञान पाठशालाओं में गाँधीनगर, शाहदरा, रघुवरपुरा, कैलाशनगर, न्यू उस्मानपुर, वसंतकुंज, शंकरनगर, नजफगढ रोड, नांगलोई, प्रीतमपुरा, राजपुर रोड, पटपडगंज, सिविल लाइन्स, भारत नगर, विकासपुरी, अशोक विहार, आत्मार्थी ट्रस्ट, अशोका एन्क्लेव, शास्त्री पार्क, लारेन्स रोड, शंकर रोड तथा हरियाणा के बहादुरगढ़ आदि लगभग 27 स्थानों पर निरीक्षण किया गया।

सभी स्थानों पर श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, जयपुर के नियमों से अवगत कराते हुये, वहाँ के विद्यार्थियों को ग्रीष्मकालीन परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये प्रेरित किया गया। अधिकांश स्थानों पर प्रवचन एवं कक्षाओं का भी आयोजन हुआ। **ह्न ओमप्रकाश आचार्य**

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

पानकनेर गांव (हिंगोली-महा.) : यहाँ दिनांक 6 से 8 जुलाई,05 तक नवनिर्मित श्री 1008 शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ दि. जैन मंदिर का वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव पंचपरमेष्ठी एवं यागमण्डल विधान पूर्वक सम्पन्न हुआ।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित मधुकरजी जैन जलगाँव, पण्डित अशोकजी मिरकुटे, पण्डित जयचन्दजी बोरालकर डोणगांव, पण्डित सुनीलजी बेलोकर सुलतानपुर एवं पण्डित सुरेशजी काले राजुरा ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर पण्डित विजयकुमारजी राऊत के प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 8 जुलाई को भगवान शांतिनाथ, भगवान कुन्थुनाथ एवं भगवान अरनाथ के साथ अन्य 11 प्रतिमायें भी वेदी पर विराजमान की गईं।

ध्वजारोहण श्री ओंकाररावजी राऊत रीठद ने एवं मंदिर का उद्घाटन श्री कैलाशचन्दजी पाटनी वाशिम ने किया। **ह्न संतोष पाटनी**

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 33

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

यहाँ अमृतचन्द्राचार्यदेव ने उदाहरण के रूप में भी भविष्य की पर्याय में देवत्व या सिद्धत्व को देखा है।

व्यवहार में ऐसा कहते हैं कि ह्न ''मानलो ! मैं मरकर देवगति में गया।''

तब कोई कहे कि ह्न ''भाई ऐसा क्यों ! नरक गये तो।''

तब कहते हैं कि ह्न ''अरे भाई ! कम से कम विकल्प में तो यह रहने दो कि देव पर्याय में गया। हम नरक की बात क्यों सोचें ? अपने पूर्वजों ने भी अपने व्यवहार में इसी भाषा को अपनाया था। तब ऐसा व्यवहार होता था कि देवलोक हो गया, स्वर्गवास हो गया। ऐसा कोई नहीं लिखता था कि नरकवास हो गया। चाहे वह नरक में ही गया हो; परन्तु सभी इसी भाषा का प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ यह है कि हमारे पूर्वजों ने नरक जाने की कल्पना ही नहीं की है।

यदि तत्त्वाभ्यासी लोग स्वर्ग में नहीं जायेंगे तो क्या पापी लोग जायेंगे ?

मैथिलीशरण गुप्त ने इसके संदर्भ में बहुत उत्कृष्ट लिखा है ह्न

मैं मनुष्यता को सुरत्व की जननी भी कह सकता हूँ।
किन्तु पतित को पशु कहना मैं कभी नहीं सह सकता हूँ।।

संस्कृत कवि भर्तृहरी ने तो यहाँ तक लिखा है कि ह्न मनुष्य घास नहीं खाता है ह्न यह पशुओं का भाग्य है; क्योंकि जो चीज यह खाता है, वह पशुओं को नहीं मिलती। ये अनाज खाता है तो पशुओं को अनाज नहीं मिलता है। भर्तृहरि का वह छन्द इसप्रकार है ह्न

साहित्य संगीत कलाविहीन: साक्षात्पशुपुच्छविषाणहीन:।
तृणं न खादन्नपि जीवमान:, तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ।।

जो मनुष्य साहित्य, संगीत और कला से विहीन है, वह व्यक्ति पूँछ और सींगों से रहित साक्षात् पशु ही है। वह घास नहीं खाता है ह्न यह पशुओं का महाभाग्य है।

पर्याय से द्रव्य अन्य है। जो जिससे उत्पन्न हुई, वह उससे अन्य है, अत: वह असत् का उत्पाद हुआ है; क्योंकि वह पहले नहीं थी, अब पैदा हुईहै।

जिसकी चर्चा आज बहुत चलती है, वह ११४ वीं गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

दव्वट्ठिएण सव्वं दव्वं तं पज्जयट्ठिएण पुणो।
हवदि य अण्णमणण्णं तक्काले तम्मयत्तादो ।।११४।।

(हरिगीत)

द्रव्य से है अनन्य जिय पर्याय से अन-अन्य है।
पर्याय तन्मय द्रव्य से तत्समय अत: अनन्य है।।११४।।

द्रव्यार्थिकनय से सब द्रव्य हैं और पर्यायार्थिकनय से वह अन्य-अन्य है; क्योंकि उस समय तन्मय होने से (द्रव्य पर्यायों से) अनन्य है।

आचार्य यहाँ यह बताना चाहते हैं कि द्रव्यार्थिकनय से द्रव्य पर्यायों से अनन्य है और पर्यायार्थिकनय से द्रव्य पर्यायों से अन्य है।

इस विषय को अमृतचन्द्राचार्य ने टीका में विशेष स्पष्ट किया है ह्न

''वास्तव में सभी वस्तुयें सामान्य-विशेषात्मक होने से वस्तु का स्वरूप देखनेवालों के क्रमश: सामान्य और विशेष को जाननेवाली दो आँखें हैं ह्न (१) द्रव्यार्थिक (२) पर्यायार्थिक।

इनमें से पर्यायार्थिक चक्षु को सर्वथा बन्द करके जब मात्र खुली हुई द्रव्यार्थिक चक्षु द्वारा देखा जाता है; तब नारकपना, तिर्यंचपना, मनुष्य-पना, देवपना और सिद्धपना पर्यायरूप विशेषों में रहनेवाले एक जीवसामान्य को देखनेवाले और विशेषों को न देखनेवाले जीवों को 'वह सब जीवद्रव्य है' ह्न ऐसा भासित होता है। और जब द्रव्यार्थिक चक्षु को सर्वथा बंद करके मात्र खुली हुई पर्यायार्थिक चक्षु के द्वारा देखा जाता है; तब जीवद्रव्य में रहनेवाले नारकपना, तिर्यंचपना, मनुष्यपना, देवपना और सिद्धपना-पर्यायस्वरूप अनेक विशेषों को देखनेवाले और सामान्य को न देखनेवाले जीवों को (वह जीवद्रव्य) अन्य-अन्य भासित होता है; क्योंकि द्रव्य उन-उन विशेषों के समय तन्मय होने से उन-उन विशेषों से अनन्य है ह्न कण्डे, घास, पत्ते और काष्ठमय अग्नि की भाँति। (जैसे घास, लकड़ी इत्यादि की अग्नि उस-उस समय घासमय, लकड़ीमय इत्यादि होने से घास, लकड़ी इत्यादि से अनन्य है; उसीप्रकार द्रव्य उन-उन पर्यायरूप विशेषों के समय तन्मय होने से उनसे अनन्य है - पृथक् नहीं है।)

और जब उन द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक दोनों आँखों को एक ही साथ खोलकर उनके द्वारा और इनके द्वारा (द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक चक्षुओं के) देखा जाता है तब नारकपना, तिर्यंचपना, मनुष्यपना, देवपना और सिद्धपना पर्यायों में रहनेवाला जीवसामान्य तथा जीवसामान्य में रहनेवाले नारकपना, तिर्यंचपना, मनुष्यपना, देवपना और सिद्धत्वपर्याय-रूप विशेष तुल्य काल में ही (एक ही साथ) दिखाई देते हैं।''

आचार्य यहाँ कह रहे हैं कि वस्तु का मूल स्वरूप सामान्य-विशेषात्मक है। उसे स्पष्ट करने के लिए उन्होंने एक द्रव्यार्थिकनयरूप आँख एवं दूसरी पर्यायार्थिकनयरूप आँख का उदाहरण दिया है।

यहाँ मात्र द्रव्यार्थिक आँख को ही खुली रखना और पर्यायार्थिक आँख को बंद रखना ह्न ऐसा नहीं कहा है। पर्यायार्थिक चक्षु को कभी खोलना ही नहीं, इसकी चर्चा आचार्यदेव ने की ही नहीं है।

अमृतचन्द्रदेव ने कण्डे की अग्नि का उदाहरण देकर यह कहा है कि उसमें मात्र अग्नि को ही देखो, कण्डे को मत देखो। इसे ही द्रव्यदृष्टि कहते हैं।

वह कण्डे की अग्नि कण्डे के आकाररूप हैं और उसका देखना इसलिए जरूरी है; क्योंकि घास की अग्नि तो दो मिनट में बुझेगी; लेकिन कण्डे की अग्नि को दबाने के बाद भी २४ घंटे विद्यमान रहती है। इसलिए अग्नि की सुरक्षा करना है अथवा अग्नि से सुरक्षा करना है तो यह देखना पड़ेगा कि वह कौनसी अग्नि है, वह कितने काल तक रहेगी और कितनी गर्मी देगी ?

इसे जानना कि नहीं जानना है; इसपर आचार्य कहते हैं कि अग्नि तो अग्नि होती है; वह जलाने का काम कभी बंद नहीं करेगी; इसलिए यहाँ ऐसा भेद न कीजिए कि यह अग्नि अच्छी है और वह अग्नि बुरी। अग्नि तो अग्नि है और वह जलाने का कार्य करती है ह्न बस इसका नाम द्रव्यदृष्टि है।

अंत में आचार्य ने प्रमाणदृष्टि की चर्चा की है; जिसमें द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक ह्न दोनों आँखों से एकसाथ देखते हैं; वह तीसरी प्रमाणदृष्टि है।

अब यहाँ प्रश्न है कि आत्मा का अनुभव प्रमाण है या नय ? यह अनुभव प्रत्यक्ष है या परोक्ष है ?

इसके उत्तर में हम पूछते हैं कि प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रमाण के भेद हैं या नय के ? अनुभव प्रमाण हुआ और अनुभव प्राप्त करना है तो क्या वह अनुभवप्रमाण हेय है ? केवलज्ञान भी प्रमाण है तो क्या वह भी हेय है यदि हाँ तो उसे प्राप्त क्यों करना है ? ●

तेरहवाँ प्रवचन

प्रवचनसार परमागम के ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार के अन्तर्गत सामान्यज्ञेयाधिकार की चर्चा चल रही है। जगत में जितनी वस्तुएँ हैं, वे सभी ज्ञेय हैं; ज्ञान का विषय होने के कारण ही उन्हें ज्ञेय कहा जाता है।

'मामा' यह नाम भानजे की अपेक्षा है, 'पिता' यह संज्ञा पुत्र की अपेक्षा है। ऐसे ही समस्त पदार्थों की जो 'ज्ञेय' नामक संज्ञा है, वह ज्ञान की अपेक्षा है। 'प्रमेय' नामक संज्ञा प्रमाण की अपेक्षा है। इसी आधार पर बड़े-बड़े न्याय के ग्रन्थों के नाम प्रमेयरत्नमाला एवं प्रमेयकमलमार्तण्ड रखे गए हैं। इसीप्रकार इस महाधिकार का नाम 'ज्ञेयतत्त्व-प्रज्ञापन महाधिकार' रखा गया है।

इसी संदर्भ में अमृतचन्द्राचार्य ने 115वीं गाथा की टीका में सप्तभंगी अर्थात् सात भंगों की चर्चा की है।

प्रत्येक पदार्थ (1) स्वरूप से 'सत्' है (2) पररूप से 'असत्' है (3) स्वरूप और पररूप से युगपत् 'कथन' अशक्य है, अत: अवक्तव्य है (4) स्वरूप से और पररूप से क्रमश: 'सत् और असत्' है (5) स्वरूप से और स्वरूप-पररूप से युगपत् 'सत् और अवक्तव्य' है' (6) पररूप से और स्वरूप-पररूप से युगपत् 'असत् और अवक्तव्य' है तथा (7) स्वरूप से, पररूप से और स्वरूप-पररूप से युगपत् सत्-असत् और अवक्तव्य है।

जिनके यहाँ सप्तभंगी नहीं है, उनके यहाँ 'एव' यह शब्द जहरीला है। 'एव' अर्थात् 'ऐसा ही है।' वस्तु नित्य ही है, इसमें वस्तु के अनित्यत्व धर्म का सर्वथा निषेध हो जाता है; इसलिए वह शब्द जहरीला है।

लोक में जिसे जहर कहा जाता है; उसे ही यदि सावधानी से प्रयोग किया जाय तो वह औषधि बन जाती है। जितनी भी औषधियाँ बनी हैं; उनमें आधी से अधिक जहर से बनती हैं; क्योंकि बीमारी के कारण शरीर के अंदर जो जहर उत्पन्न हुआ है, उसे मारने के लिए दूसरा जहर चाहिए; लेकिन वह शोधित होना चाहिए।

ऐसे ही यद्यपि एवकार जहरीला है; परंतु यदि वह सप्तभंगी द्वारा संशोधित होता है तो वह जहर औषधि बन जाती है। इसलिए आचार्य ने सप्तभंगी को अमोघमंत्र कहा है।

आज, किसी को यदि साँप काटता है तो उसे अस्पताल ले जाते हैं; परन्तु पहले मन्त्रवादी होते थे, जो मन्त्र से जहर उतारते थे। इसलिए आचार्य ने यहाँ मन्त्र शब्द का प्रयोग किया है।

जो एवकार में जहर है, उस जहर को कम करने के लिए हमारे पास सप्तभंगीरूपी अमोघ (अचूक) मंत्र है, यह सप्तभंगीरूपी मंत्र उस एवकार के जहर को दूर कर देता है।

जब अपेक्षा नहीं लगती है, तब एवकार जहर होता है। वस्तु द्रव्यार्थिकनय से नित्य ही है। यह कथन जहरीला नहीं है; क्योंकि इसमें 'द्रव्यार्थिक नय से' यह अपेक्षा लगी है। इसे हम ऐसा भी कह सकते हैं कि वस्तु द्रव्यदृष्टि से नित्य ही है। यह मामा की अपेक्षा भानजा है; इसमें हमने कोई नय नहीं लगाया है; परंतु अपेक्षा बता दी है। जहाँ नय है; वहाँ उस कथन में अपेक्षा निहित है एवं जहाँ अपेक्षा है, वहाँ उस कथन में नय भी निहित है।

जहाँ अपेक्षा लगाई जाती है, वहाँ 'ही' शब्द का जहर खत्म हो जाता है। इस पर यदि कोई ऐसा कहे कि जब 'ही' और 'सर्वथा' शब्द जहरीले हैं; तब हम उन शब्दों का प्रयोग ही क्यों करें ?

आचार्य कहते हैं कि 'अपेक्षा' का अपना एक महत्त्व है, उसका कोई अर्थ है, उसका कोई कार्य है। 'अपेक्षा' उस कथन में दृढ़ता प्रदान करती है। यदि दृढ़ता नहीं रहेगी तो कथन ढुलमुल हो जाएगा। इसलिए उस कथन में दृढ़ता प्रदान करने के लिए 'ही' लगाना जरूरी है।

हमने यह अपेक्षा लगाई कि यह पिता का पुत्र ही है; इसका तात्पर्य यह है कि यह पिता का पुत्र ही है, भानजा नहीं। जब अपेक्षा में 'ही' का प्रयोग किया जाता है तो स्वयमेव ही अन्य सभी अपेक्षाओं का निषेध हो जाता है।

मैंने 'परमभावप्रकाशक नयचक्र' के पृष्ठ क्र. 205 पर इसका स्पष्ट उल्लेख किया है कि सर्वथा, एकान्त तथा ही ह्न ये सभी शब्द जब अकेले प्रयुक्त होते हैं, तब मिथ्यात्व के सूचक नहीं होते; किन्तु जब ये आपस में मिलकर एकसाथ प्रयुक्त होते हैं तो मिथ्यात्व के सूचक हो जाते हैं। जैसे ह्न 'सर्वथा-एकान्त', 'सर्वथा ही', एकान्त ही आदि।'

प्रमाणसप्तभंगी और नयसप्तभंगी ह्न इसप्रकार सप्तभंगी दो प्रकार की होती है। नय सप्तभंगी में 'ही' तथा प्रमाण सप्तभंगी में 'भी' लगता है। जब कथंचित् अथवा स्यात् पद लगाया जाता है तो वहाँ 'भी' लगाना पड़ता है।

'मैं किसी अपेक्षा आ भी सकता हूँ।' और 'मैं किसी अपेक्षा नहीं भी आ सकता हूँ।' मेरे ऐसा कहने पर सामनेवाला कहता है कि ह्न इससे काम नहीं चलेगा, आप साफ-साफ बताइये; तब अपेक्षा स्पष्ट करनी पड़ती है कि ह्न 'मेरी तबियत ठीक नहीं रही तो, उसमें यह परिस्थिति छिपी हुई है।

प्रमाणसप्तभंगी में कहते हैं कि 'स्यात् अस्ति' और 'स्यात् नास्ति' अर्थात् किसी अपेक्षा से है 'भी' और किसी अपेक्षा से 'नहीं भी' है। जब स्याद् या कथंचित् शब्द न लगाकर अपेक्षा बता देते हैं; तब ही लगाना चाहिए; जैसे कि द्रव्यार्थिकनय से वस्तु नित्य ही है।

हम व्यवहार में बोलते हैं कि यह किसी का पिता है, यह किसी का भानजा है, यह किसी का मामा है - यह कथन उचित है; यह किसी का पिता भी है ह्न यह कथन भी उचित है; परंतु यह इसका पिता भी है - यह कथन उचित नहीं है। यदि अपेक्षा स्पष्ट कर दी जाएगी तो 'ही' लगाना ही होगा।

यदि 'ही' व 'भी' के प्रयोग में सावधानी नहीं रखी गई तो खतरा उत्पन्न हो सकता है। 'ही' की जगह 'भी' का प्रयोग एवं 'भी' की जगह 'ही' का प्रयोग अर्थ का अनर्थ कर सकता है। ध्यान रहे प्रमाणसप्तभंगी में 'भी'लगता है एवं नयसप्तभंगी में 'ही' लगता है।

जहाँ 'एव' लगता है, वह नयसप्तभंगी है; उसमें उस कथन को दृढ़ता प्रदान करने के लिए अपेक्षा लगाई गई है। यदि दृढ़ता प्रदान करना है तो उसमें अपेक्षा का उद्घाटन भी जरूरी है। वहाँ मात्र 'किसी अपेक्षा' ह्न ऐसा कहने से काम नहीं चलेगा।

सरल शब्दों में सप्तभंगी का स्वरूप समझने के लिए सर्वप्रथम मूलभंगों को समझना आवश्यक है। सत् अर्थात् अस्ति और असत् अर्थात् नास्ति ये दो मूलभंग हैं।

इन्हें मूलभंग इसलिए माना जाता है; क्योंकि यदि नित्य की अपेक्षा लगायेंगे तो उसमें 'कथंचित् नित्यमस्ति' कहने पर यहाँ अस्ति को समाहित किया गया है। ऐसे सभी भंगों में यह अपेक्षा लगती है। यह मूल भंग इसलिए है; क्योंकि इसके बिना काम नहीं चलता । ये तो अकेले लगते हैं; लेकिन और कोई भंग अकेले नहीं लगते हैं। स्यादस्ति अर्थात् स्यात् है, स्याद्नास्ति अर्थात् स्यात् नहीं है। अस्ति-नास्ति के अतिरिक्त स्याद् अवक्तव्य भी अकेला लगता है; लेकिन नित्य या भिन्न अकेले नहीं लगते हैं। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

1.विदिशा (म.प्र.) निवासी श्रीमती निधि जैन धर्मपत्नी इंजी. आलोकजी जैन का दिनांक 20 जून, 05 को वस्तुस्वरूप का चिन्तन करते हुये शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप इंजी. राजेन्द्रकुमारजी जैन की पुत्रवधु एवं एड. बाबूलालजी की सुपुत्री थी। आप जीवन पर्यंत धार्मिक संस्कारों एवं सद्विचारों से ओतप्रोत रहीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 1002/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

2.जबलपुर (म.प्र.) निवासी पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन का दिनांक 23 जुलाई को रात्रि में शांत परिणामों से देहावसान हो गया।

आप स्वाध्यायप्रिय एवं तत्त्वरसिक विद्वान थे। स्थानीय हनुमानताल मन्दिर, लाडगंज मन्दिर एवं मुमुक्षु मण्डल में आप प्रवचन किया करते थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों – यही भावना है।

वेदी शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न

अलवर (राज.) : यहाँ चेतन एन्क्लेव में दिनांक 20 एवं 21 जुलाई, 2005 को नवनिर्मित जिनमंदिर हेतु रत्नत्रय वेदी का शिलान्यास एवं भगवान महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा के मुख्यअतिथि श्री प्रतापसिंह सिंघवी- स्वायत्त शासन मंत्री, राज.सरकार थे। अध्यक्षता श्री अजयजी अग्रवाल- अध्यक्ष नगर परिषद ने की। सभा का संचालन जिनेन्द्रजी जैन ने किया।

इस प्रसंग पर दोनों दिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर के निर्देशन में पण्डित प्रशांतजी उखलकर गोवर्धन एवं पण्डित राहुलजी शास्त्री अलवर ने सम्पन्न कराये।

भगवान शांतिनाथ, भगवान कुन्थुनाथ एवं भगवान अरनाथ की वेदियों का शिलान्यास क्रमश: श्री रतनलालजी वन्दना प्रकाशन, श्री रतनलालजी अशोका रेडीमेड तथा श्री सुभाषजी अग्रवाल परिवार द्वारा किया गया।

स्थानीय विद्वान पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री, पण्डित अरुणजी शास्त्री एवं पण्डित अजितजी शास्त्री का भी कार्यक्रम में विशेष योगदान रहा।

समस्त कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुए। **ह्न योगेश जैन**

डॉ. भारिल्ल को विद्यावारिधि की उपाधि अब 7 अगस्त को ...

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 7 अगस्त, 05 को प्रात: 9 बजे डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से भारत जैन महामण्डल, राजस्थान द्वारा **विद्यावारिधि** की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। इसी अवसर पर श्रीमती सुन्दरकुमारी गदैया को भी **समाज गौरव** की उपाधि से सम्मानित किया जायेगा।

आप सभी को हमारा हार्दिक आमंत्रण है। **ह्न सम्पतकुमार गदैया**

समाचार संक्षेप

➔ गुड़गाँव : होण्डा मोटर कम्पनी के श्रमिकों की बर्खास्तगी के खिलाफ ज्ञापन देने लघु सचिवालय पहुँचे मजदूरों पर पुलिस ने कहर बरपाया।

➔ उत्तर भारत का वीरप्पन नाम से कुख्यात वन्यजीव तस्कर संसारचन्द की गिरफ्तारी के पश्चात् उसके गिरोह का ताना-बाना राजस्थान पुलिस एवं सीबीआई मिलकर खोलेगी।

➔ उत्तर प्रदेश सुन्नी वक्फ बोर्ड द्वारा ताजमहल को स्व-संपत्ति घोषित किये जाने के पश्चात् कई राजनैतिक दलों सहित केन्द्रिय विधी मंत्री ने इस निर्णय को गलत बताते हुये ताज को धार्मिक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सम्पदा मानने पर जोर दिया।

➔ मुम्बई (बीएचएन) के ओएनजीसी प्रोडक्शन के प्लेटफार्म पर आग लगने से पूरा प्लेटफार्म नष्ट, जान-माल को हानि।

➔ सलमान खान के अंडरवर्ल्ड से कथित संबंधों के टेप के खुलासे के पश्चात् बॉलीवुड सकते में।

➔ मुम्बई एवं कोंकण में तूफानी वर्षा से जनजीवन अस्त-व्यस्त।

➔ अमेरिका ने भारत को न्यूक्लियर सप्लाई ग्रुप में शामिल किया।

➔ नासा द्वारा डिस्कवरी यान का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया गया।

➔ श्रीलंका में आयोजित होनेवाली त्रिकोणीय वन डे शृंखला में भारत की कप्तानी राहुल द्रविड को सोंपी गई।

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री मनीष कुमार जैन 'कहान' खड़ैरी (म.प्र.) का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा कनिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति **(JRF)** हेतु चयन हो गया है।

वर्तमान में आप जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं से **समयसार की संस्कृत टीकाओं का समीक्षात्मक अध्ययन** विषय पर पीएच-डी. कर रहे हैं। आपको जैनपथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अगस्त (प्रथम) 2005
J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शनतथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127